सीमित एक्सपोज़र वाले स्थानों में मातृभाषा का उपयोग करते हुए अंग्रेजी भाषा का शिक्षण

Early Literacy Initiative
Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad
Practitioner Brief (18)
2019

Supported by
TATA TRUSTS

This Practitioner Brief is part of a series brought out by the Early Literacy Initiative anchored by the Azim Premji School of Education at the Tata Institute of Social Sciences, Hyderabad.

मातृभाषा के उपयोग से कम एक्सपोज़र वाले स्थान में अंग्रेज़ी भाषा का शिक्षण

शिवानी मिस एक सरकारी स्कूल की शिक्षिका हैं जो राजस्थान के उदयपुर ज़िले में अंग्रेज़ी और सामाजिक अध्ययन पढ़ाती हैं। उन्होंने खुद एक स्थानीय मराठी-माध्यम सरकारी स्कूल में पढ़ाई की है, जहाँ उनका अंग्रेज़ी से वास्ता छठी कक्षा से ही शुरू हुआ। उन्होंने बी.ए किया है और बी.एड. के दौरान सामाजिक अध्ययन को एक शिक्षण विषय के रूप में चुना। हालाँकि उन्हें केवल सामाजिक अध्ययन पढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया था; परन्तु शिक्षकों की कमी और अपने साथी शिक्षकों की तुलना में अंग्रेज़ी पर बेहतर पकड़ के कारण, उन्हें अंग्रेज़ी सिखाने की अतिरिक्त ज़िम्मेदारी दी गई थी। निम्नलिखित वार्तालाप अंग्रेज़ी पढ़ाने के बारे में उनकी दुविधाओं और चिंताओं को प्रतिध्वनित करता है:

साक्षात्कारकर्ता: छात्रों को अंग्रेज़ी सिखाने का आपका अनुभव क्या है? आप अंग्रेज़ी कब से पढ़ा रही हैं?

शिक्षिका: पहले मैं केवल सामाजिक अध्ययन पढ़ाती थी। पिछले दो वर्षों से, मैंने अंग्रेज़ी पढ़ाना शुरू कर दिया है क्योंकि अंग्रेज़ी पढ़ाने वाले शिक्षक सेवानिवृत्त हो गए हैं। अभी कोई और है नहीं जो अंग्रेज़ी पढ़ा सके, इसलिए, मुझे इसे पढ़ाना पड़ रहा है। मुझे सामाजिक अध्ययन पढ़ाना पसंद है क्योंकि मैंने इसे कॉलेज में सीखा है इसलिए यह अच्छा है। हालाँकि, कभी-कभी अंग्रेज़ी पढ़ाने में मै खुद को तैयार नहीं पाती हूँ क्योंकि मैं इसे अच्छी तरह से नहीं जानती।

साक्षात्कारकर्ता: आप अंग्रेज़ी कैसे सीखाती हैं?

शिक्षिका: मैं पाठ्यपुस्तक के पाठ को पढ़ती हूं और फिर इसे हिंदी में अनुवाद कर छात्रों को समझाया करती हूँ अन्यथा वे समझ नहीं पाते हैं। शब्द उनके लिए कठिन हैं। उनके लिए हिंदी समझना ही अपने आप में बहुत बड़ी बात है क्योंकि वे घर पर अन्य भाषाएं बोलते हैं। उनके लिए, बिना अनुवाद किए अंग्रेज़ी सीखने का सवाल ही नहीं उठता।

साक्षात्कारकर्ता: अंग्रेज़ी सिखाते समय आपको किस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है?

शिक्षिका: हम खुद शिक्षक होकर भी अंग्रेज़ी में संघर्ष करते हैं क्योंकि अंग्रेज़ी हमें छठी कक्षा से पढ़ाया जाता था। मैं उनके साथ कुछ गतिविधियां करने की कोशिश करती हूँ और उनसे अंग्रेज़ी में बात करने की कोशिश करती हूं। जब मैं उनसे अंग्रेज़ी में बात करती हूं तो छात्र मुझे जवाब नहीं देते क्योंकि यह उनके लिए यह बिल्कुल नया है। उन्होंने इन शब्दों को पहले कभी नहीं सुना है और वे नहीं जानते कि कैसे प्रतिक्रिया दें। इसलिए, मैं हिंदी में बहुत अनुवाद करती थी; लेकिन प्रधानाध्यापक और यहां तक की अन्य प्रशिक्षक भी कहते हैं कि यदि उन्हें अंग्रेज़ी सिखाना है तो हमें उनके साथ केवल अंग्रेज़ी का ही उपयोग करना है। हमें उन्हें भी सुनना होगा।

साक्षात्कारकर्ता: आप पढ़ाने के लिए कक्षा में अंग्रेज़ी का उपयोग करने के बारे में क्या सोचती हैं?
शिक्षिका: मेरी अंग्रेज़ी छोटे बच्चों को पढ़ाने के लिए अच्छी है, लेकिन वे सीधे अंग्रेज़ी नहीं समझेंगे, क्योंकि वे अंग्रेज़ी पृष्ठभूमि से नहीं आते हैं। मुझे बड़े बच्चों को भी पढ़ाने के लिए कहा गया है जहाँ उनकी पाठ्यपुस्तकों में लंबे अध्याय और कठिन शब्द हैं। केवल अंग्रेज़ी में पढ़ाना मुश्किल हो जाता है क्योंकि अगर वे समझ नहीं पाते हैं तो उनकी रुचि ख़त्म हो जाती है।

साक्षात्कारकर्ता: अंग्रेज़ी पढ़ाने के लिए आप प्रायः कितनी बार हिंदी का प्रयोग करती हैं? क्या आप किसी अन्य भाषा का भी उपयोग करती हैं?
शिक्षिका: मैंने उनके सीखने और समझने के लिए थोड़ी हिंदी और कभी-कभी मेवाड़ी (स्थानीय भाषा) का भी उपयोग करना शुरू कर दिया है।हिंदी या मेवाड़ी में पूछने पर कम से वे समझते तो हैं और जवाब भी देते हैं । , अन्यथा, अंग्रेज़ी की क्लास में, वे बहुत चुप रहते हैं। मुझे पता है कि हमें केवल अंग्रेज़ी का उपयोग करने के लिए कहा जाता है लेकिन हम क्या कर सकते हैं? हमें अनुवाद करना होगा अन्यथा वे नहीं सीख पाएंगे ।

भारत में कई अन्य शिक्षकों के अनुभवों में शिवानी मिस की चिंताएँ झलकती हैं। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती अंग्रेज़ी को इस तरह से सिखाना है कि छात्र

समझें और जवाब दें। इस सारपत्र में, हम इस चुनौती से निपटने के लिए एक बहुभाषी पद्धति का उपयोग करने की संभावना का पता लगाएंगे। हमारा मानना है कि इस तरह के शिक्षण शास्त्र छात्रों को अपनी मातृभाषा (MT) के माध्यम से उन स्थानों में अंग्रेज़ी सीखने में मदद कर सकते हैं जहाँ अंग्रेज़ी का एक्सपोज़र कम है।

भारत में इंग्लिश भाषा शिक्षण : एक वैकल्पित ज़रुरत

अधिकांश देशों में अंग्रेज़ी ने खुद को लोक-भाषा(Lingua-franca)[1] के रूप में स्थापित किया है; भारत कोई अपवाद नहीं है। स्वाभाविक रूप से, अंग्रेज़ी सीखने की आवश्यकता बढ़ी है, क्योंकि इससे कई अवसरों के लिए द्वार खुल जाते हैं I बढ़ती मांग के कारण कई राज्यों ने सरकारी स्कूल के पाठ्यक्रम की पहली कक्षा से ही अंग्रेज़ी को एक विषय के रूप में लागू कर दिया है। अधिकांश भारतीय बच्चों के लिए, अंग्रेज़ी उनकी घरेलू भाषा नहीं है। यहाँ तक की यह उनकी दूसरी भाषा भी नहीं है, क्योंकि कई छात्र ऐसे परिवेश से आते हैं जहाँ उन्हें दूर-दूर तक इसका एक्सपोज़र नहीं होता है । इसी कारणवश अंग्रेज़ी प्रायः एक विदेशी भाषा के रूप में देखी जाने लगती है जो छात्रों के सन्दर्भ से दूर की चीज़ है, और इसे सीखना भी मुश्किल हो जाता है। अंग्रेज़ी के व्यापक महत्व (सामाजिक और आर्थिक रूप से) को देखते हुए, छात्रों को शुरुआती ग्रेड से ही अंग्रेजी सीखने - सिखाने के प्रभावी तरीकों की खोज करना महत्वपूर्ण हो जाता है ।

वर्तमान में, भारत में अंग्रेज़ी पढ़ाने की सबसे प्रचलित विधियाँ - व्याकरण-अनुवाद (ग्रामर ट्रांसलेशन)[2] और डायरेक्ट विधि[3] डायरेक्ट विधि में बच्चों को पढ़ाने के लिए केवल अंग्रेज़ी का उपयोग करते हैं। हालाँकि, भारत के कई हिस्सों में परिवेश में अंग्रेज़ी भाषा से सीमित एक्स्पोज़र , शिक्षकों का इस भाषा का सीमित ज्ञान और अपने दैनिक जीवन में इस भाषा का उपयोग करने के सीमित अवसरों के कारण इस तरीके से पढ़ाना चुनौतीपूर्ण है । इसलिए, भारत में शैक्षिक संदर्भों में अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षण के ऐसे प्रभावी तरीकों की ज़रुरत है जो इन

---

[1] ऐसी भाषा जिसे बोलने वालों के बीच एक आम भाषा के रूप में अपनाया जाता है, जिनकी मूल भाषाएं अलग होती हैं ।

[2] शिक्षण की एक पारंपरिक पद्धति जिसमे व्याकरण के नियमों, अनुवाद अभ्यासों और लम्बी शब्दावली जिनके अर्थ याद करना और उनके अर्थों की व्याख्या पर सबसे अधिक ज़ोर दिया जाता हो। मौखिक कौशल विकास पर ध्यान कम था।

[3] एक विधि जो जबरन-मोनोलिंगुअल (एकल भाषा) परिवेश बनाकर दूसरी भाषा सिखाना, जहां भाषा को सिखाने के लिए केवल लक्ष्य भाषा का उपयोग किया जाता है। “केवल अंग्रेजी” की क्लास इसका एक उदाहरण है।

मुद्दों के प्रति संवेदनशील हों और इससे अवगत हों कि कक्षा के बाहर इस लक्ष्य भाषा के इस्तेमाल के अवसर बहुत कम है। इन्हें ध्यान में रखते हुए अभी वर्तमान में जिस प्रणाली का इस्तेमाल किया जाता है उससे अलग प्रभावी तरीके को खोजना और महत्वपूर्ण हो जाता है।

पिछले कई दशकों (लेकिन ज्यादातर पश्चिमी संदर्भों) में किए गए शोध से पता चलता है कि प्रथम भाषा (L1) का इस्तेमाल दूसरी भाषा (L2) को सिखाने में एक संसाधन के रूप में किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, विवियन कुक दृढ़ता से अनुशंसा करते हैं कि "... अब उस दरवाज़े को खोलने का समय है जो जो भाषा शिक्षण के लिए पिछले 100 वर्षों से मज़बूती से बंद है। उस दरवाज़े का नाम है- कक्षा में L1 का व्यवस्थित उपयोग।" (कुक, 2001, पृष्ठ 403)। भले ही सिद्धांतकारों ने L2 शिक्षण में L1 के उपयोग को प्रोत्साहित नहीं किया है, इसका मतलब यह नहीं है कि L1 वास्तविक कक्षाओं से बाहर रखा जाए।

वास्तव में, झिंगरन (2009) ने बताया है कि शिक्षण के लिए आधिकारिक शिक्षण की भाषा और वास्तविक भाषा जिसमें बच्चों को पढ़ाया जाता है, के बीच एक बड़ा अंतर हो सकता है। कुछ शिक्षक L1 का उपयोग न्यूनतम रूप से करते हैं, जबकि अन्य इसका उपयोग बच्चों को समझने और सीखने में मदद करने के लिए बड़े पैमाने पर करते हैं।

कुछ विद्वानों (जैसे, गार्सिया और वी, 2014) ने बताया कि इनमें से कई सिद्धांत बड़े पैमाने पर एकल भाषाई देशों में विकसित किए गए हैं, और इसलिए, बहुभाषी मस्तिष्क वास्तव में कैसे काम करते हैं, के संदर्भ में उनकी समझ सीमित हैं। इन विद्वानों का तर्क है कि बहुभाषी वक्ता, भाषाओं को "L1", "L2" में वर्गीकृत नहीं करते हैं बल्कि ज़रुरत और संदर्भ के अनुसार उन्हें तरलता के साथ मिलाकर उपयोग करते हैं। अधिकांश समकालीन भारतीय इस सिद्धांत को पहचानने में सक्षम होंगे, क्योंकि हम जानते हैं कि हम अपनी भाषाओं को स्वतंत्र रूप से मिलाते हैं जिससे हिंदी और अंग्रेज़ी, मराठी और हिंदी एवं ऐसे ही अन्य भाषाओँ की खिचड़ी बन जाती है। विशेष रूप से शुरुआती वर्षों में, बच्चों को अपनी भाषाओं का मिश्रण करने की अनुमति देना महत्वपूर्ण है, ताकि वे उन भाषाओं के सहारे जिन्हें वे बेहतर जानते हैं उन भाषाओं तक पहुंचने सके जिन्हें वे कम जानते हैं।

क्या भाषाओं के मिश्रण से बच्चों को नई भाषा सीखने में रुकावट होगी? हम जिम कमिंस और उनके सहयोगियों (कमिंस, 1991 देखें) द्वारा किए गए काम से समझ पाए हैं कि बहुभाषी वक्ताओं में कई भाषाओं के लिए, जिन्हें वे जानते हैं एक "सामान्य अंतर्निहित कुशलता" (common underlying proficiency) विकसित होती है, और यह प्रवीणता उन्हें अपनी समझ/ज्ञान को भाषाओं के बीच अदला बदली करने की अनुमति देती है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा जिसने हिंदी में पढ़ना सीख लिया है, वह इस बारे में कई बातें समझ चुका होता है कि ये भाषा कैसे काम करती है; वह समझ जाता है कि सभी अमूर्त प्रतीकों (अक्षर) की एक ध्वनि होती हैं; वह जानता है कि उसे पढ़ने के लिए शब्दों की ध्वनियों को मिलाना होगा; यदि अच्छी तरह से सिखाया जाय, तो वह यह भी समझ जाता है कि उसे शब्दों के अर्थ निकालना है; अपरिचित शब्दों का अर्थ कैसे पता करें, पढ़ने या लिखने के दौरान विराम चिह्न का उपयोग कैसे करें, इत्यादि। अपनी कक्षा में हो रहे अभ्यास और तरीकों से, उसने ये भी सीखा होगा कि जो कुछ भी पढ़ा है उसके अर्थ की चर्चा दूसरों के साथ कैसे करना है। अंग्रेज़ी सीखने (या, कोई अन्य भाषा) सीखने के दौरान, इस सारी समझ को नई भाषा में स्थानांतरित किया जा सकता है। इसलिए, प्रथम भाषा को नई भाषा सीखने में बाधा के रूप में देखने के बजाय, हमें प्रथम भाषा को दूसरी भाषा सीखने के पुल/आधार के रूप में उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। लेकिन, क्या यह भारतीय परिवेश में काम करेगा जहां अंग्रेज़ी से एक्सपोज़र बहुत कम है? इस लेख के पहले लेखक (रिया पारिख) ने दूसरे लेखक (शैलजा मेनन) के मार्गदर्शन में इस प्रश्न को अपनी मास्टर्स ऑफ एजुकेशन रिसर्च परियोजना के रूप में शोध करने का फैसला किया।

महाराष्ट्र में किए गए शिक्षक शोध

हमने एक संस्था, क्वालिटी एजुकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (QUEST) के साथ काम करने का फैसला किया, जो एक गैर-सरकारी संगठन है और महाराष्ट्र के आदिवासी इलाकों में बड़े पैमाने पर काम करता है। इसका मुख्य कार्यालय सोनाले गाँव (वाडा तालुका, पालघर ज़िला) में स्थित है, जो कटकरी, मल्हार कोली और वारली जनजातियों का घर है। आदिम जनजातियों के बीच वर्गीकृत ये तीन जनजातियाँ मिलकर उस क्षेत्र की कुल आबादी का लगभग 70% हिस्सा बनती हैं (कुलकर्णी,

2008)। इसके अलावा, जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण अनुपात है जिन्हें ओबीसी (अन्य पिछड़ी जातियों) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। 2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, वाडा की साक्षरता दर 63% है। QUEST उस क्षेत्र के कई स्कूलों में पूरक शैक्षिक कार्यक्रम चलाता है।

रिया ने एक सरकारी स्कूल की कक्षा में एक "शिक्षक शोध " अध्ययन करने की योजना बनाई, जहां QUEST एक कार्यक्रम चला रहा था। शिक्षक शोध उन आंकड़ों का एक व्यवस्थित संकलन, उन पर प्रतिक्रिया/चिंतन और उनकी व्याख्या है जो शिक्षक अपनी समझ और शिक्षण को बेहतर करने के उद्देश्य से अपने शिक्षण के दौरान अपने खुद की गतिविधियों के लिए एकत्र करतें है(वालेस, 1998)। विभिन्न सेटिंग्स/परिवेश में अंग्रेज़ी की उच्च आवश्यकता और इसकी अनुपलब्धता का अवलोकन करने के बाद, शुरू में हम जिस प्रश्न की छान-बीन करना चाहते थे, वह प्रश्न था: क्या मातृभाषा (MT) को अंग्रेज़ी के कम-एक्सपोज़र वाले परिवेश में अंग्रेज़ी सिखाने के लिए एक पुल के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है? ऐसे परिवेश में किए गए शुरुआती अवलोकन से संकेत मिला कि शिक्षक खुद उन समस्याओं से जूझ रहे हैं जिन समस्याओं का सामना इस सारपत्र के प्रारंभ में उल्लेखित शब्द-चित्र में शिवानी मिस कर रहीं थी। हमने सोचा कि मातृभाषा (MT) का उपयोग करने से बच्चों को अंग्रेज़ी की तरफ बढ़ने में आसानी हो सकती है। हालांकि, रिया को उन बच्चों की मातृभाषा (MT) नहीं आती थी जो कक्षा में आदिवासी भाषा बोलते थे। इसलिए, आदर्श तो नहीं पर, हमने मराठी, एक ऐसी भाषा जो बच्चों के दैनिक बोलचाल में है, का उपयोग अंग्रेज़ी के लिए पुल भाषा के रूप में करने का फैसला किया। तीसरी और चौथी कक्षा के छात्रों की मिश्रित कक्षा जो दैनिक बोलचाल में मराठी से परिचित थे, उन्हें इस परियोजना में शामिल किया गया। ये छात्र तीन-चार साल से अंग्रेज़ी सीख रहे थे, लेकिन इसे समझने, बोलने, पढ़ने या लिखने में बहुत कम दक्षता थी। वे अंग्रेज़ी वर्णमाला के अक्षरों को तो जानते थे, लेकिन इससे परे, भाषा का उनका ज्ञान सीमित था। तदनुसार, इस प्रश्न की छान-बीन करने की एक योजना मिल-जुलकर तैयार की गई थी, और रिया ने उस क्षेत्र के एक ज़िला परिषद (सरकारी) स्कूल में तीसरी और चौथी कक्षा के 22 छात्रों को अंग्रेज़ी पढ़ाने में छह सप्ताह (नवंबर-दिसंबर 2018) लगाया। यहां, हम शिक्षक शोध अध्ययन के सभी

विवरणों पर नहीं जाएँगे; लेकिन हम अंग्रेज़ी भाषा शिक्षण के लिए एक प्रक्रिया का वर्णन करेंगे जो अध्ययन के दौरान विकसित हुई थी जिसमें एक संभावना दिखाई देती है। बेशक, छह सप्ताह का समय ठोस निष्कर्षों तक पहुँचने के लिए बहुत कम है; और हम यहां केवल एक प्रक्रिया का वर्णन कर रहे हैं जो हमारे लिए काम कर गई - शायद अन्य तरीके भी होंगे। हम आशा करते हैं कि हम यहां जो साझा कर रहे है वह इस तरह के कठिनाइयों से जूझ रहे शिक्षकों के लिए उपयोगी होगा।

शैक्षणिक सिद्धांत

हमने अपने अध्ययन को शिक्षण के कुछ मान्यताओं या सिद्धांतों के आधार पर डिज़ाइन किया है, जिसका वर्णन हम यहाँ संक्षेप में कर रहे हैं।

दूसरी भाषा सीखने में प्रथम भाषा एक संसाधन के रूप में: हमने कुक की (2001) अनुशंसा का उपयोग करने का फैसला किया- एक सक्रिय और व्यवस्थित तरीके से परिचित भाषा का उपयोग एक नई भाषा को सिखाने के लिए किया जाए। हमारे अध्ययन में, मराठी वहाँ के लिए परिचित भाषा थी। हमने कुछ पद्धतियों का इस्तेमाल करते हुए कक्षा में मराठी के उपयोग पर सहमति बनाई, जैसे:

a. अनुवादों के माध्यम से मराठी और अंग्रेज़ी के बीच सक्रिय संबंध बनाना; या, पाठ के अर्थ की बेहतर व्याख्या करने के लिए चर्चाओं के दौरान मराठी का उपयोग करना।
b. कक्षा-प्रबंधन के लिए इसका उपयोग करना जैसे अनुशासन बनाए रखना, कार्यों को समझाना, एक-एक छात्र के साथ अलग-अलग बातचीत करना।
c. इसे व्याकरण, ध्वनि विज्ञान और वर्तनी की प्रस्तुति और स्पष्टीकरण के लिए उपयोग करना।

विभिन्न अभ्यास और सामग्रियों का इस्तेमाल करते हुए एक "कॉमप्रीहेन्सिव" या "संतुलित" लिट्रेसी फ्रेमवर्क से भाषा शिक्षण: कॉमप्रीहेन्सिव लिट्रेसी दृष्टिकोण (फिट्जेरल्ड़, 1999, भारत में प्रारंभिक भाषा और साक्षरता पर आधार-पत्र में उद्धृत, 2016)[4] कुछ सिद्धांतों पर आधारित है जिन्हें हमने अपनी परियोजना में उपयोग करने का निर्णय लिया था:

[4] देखें: ELI के प्रैक्टिशनर ब्रीफ 12, "भारतीय कक्षाओं में व्यापक साक्षरता निर्देश मॉडल" अधिक जानने के लिए।

A. ***क्या सिखाना है***? हमने बच्चों को भाषा के कई पहलुओं को सिखाने पर ध्यान केंद्रित करने का निर्णय लिया, जैसे कि डिकोडिंग, समझ की रणनीति, धारा-प्रवाह, साहित्य पर प्रतिक्रिया देने के तरीके, लेखन, आदि।

B. ***कैसे सिखाना है?*** हमने भाषा सिखाने के लिए कई तरीकों का इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया - जिसमें मुखर वाचन से लेकर मौखिक बातचीत और चर्चा, वर्ण-ज्ञान तक और साझा पठन-लेखन व निर्देशित पठन-लेखन के अवसरों को शामिल किया गया।

C. ***किन सामाग्रियों से पढ़ाना है*** *:* चार्ट, गतिविधि कार्ड, पाठ्यपुस्तकें, बच्चों का साहित्य, इत्यादि सहित विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का उपयोग किया गया। हमने कक्षा में किए कार्यो के आधार पर द्विभाषी (दो भाषाओँ वाले) पुस्तकों और अन्य प्रकार की सामग्रियों का उपयोग करने का निर्णय लिया। हमने यह भी तय किया कि कहानी की किताबें पहले मराठी में शुरू की जाएंगी, और उसके बाद ही अंग्रेज़ी में।

इस प्रकार, क्या सिखाना है, कैसे सिखाना है, और इसके लिए उपयोग की जाने वाली शिक्षण सामग्री सभी में स्वतंत्रता और संतुलन होना चाहिए- भाषा सीखने के कौशल और प्रक्रिया से समझौता किए बगैर।

क्रैशन के प्राकृतिक पद्धति (1982) सेमिली सीख । क्रशेन दूसरी भाषा सीखने की दुनिया के एक प्रमुख विचारक है जिन्होंने दूसरी भाषा सीखने के लिए "प्राकृतिक पद्धति" का प्रस्ताव सबके सामने रखा। हमने इनकी पूरी पद्धति को अपनाने के बजाय इस पद्धति से कुछ सिद्धांत लिए, जैसे:

a. *आसानी से समझने योग्य इनपुट प्रदान करना और अर्थ पर ध्यान केंद्रित रखना।* अंग्रेज़ी सीखने की संभावना तब और बढ़ जाती है जब लक्ष्य भाषा ऐसे रूप में रखी जाए जो हमारे वर्तमान ज्ञान से बस थोड़े ऊपर के स्तर की हो। इसे "समझने योग्य इनपुट" कहा जाता है, और इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे सभी पाठों की योजना बनाई गई थी।

b. *भाषा की कक्षा में तनाव - मुक्त वातावरण बनाना।* तनाव से संबंधित विभिन्न बाधाओं के चलते भाषा सीखना दुष्प्रभावित न हो, इसके लिए हमने एक तनाव-मुक्त वातावरण बनाने की कोशिश की, जिससे बच्चों में भय या टाल-मटोल करने की भावना पैदा न हो।

c. ***रोचक और प्रासंगिक इनपुट का प्रावधान***। हमने उन विषयों को शामिल करने का निर्णय लिया, जिनमें बच्चों की रुचि हो और जो उन्हें महत्वपूर्ण लगे जिससे सीखने के लिए प्रेरणा बनी रहे ।

d. ***कोई दबावपूर्ण भाषा-प्रस्तुति और त्रुटि-सुधार*** *नहीं*। क्रशेन का सुझाव है कि पहली बार भाषा सीखने वालों पर नई भाषा में बोलने या लिखने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए, जब तक कि वे ऐसा करने के लिए तैयार न हों और सहज महसूस न करें। प्रारंभिक चरणों में, त्रुटि-सुधार से यथासंभव बचा जाना चाहिए जिससे शिक्षार्थी पूरी तरह से व्यक्त करने में हतोत्साहित न हो। इसके अतिरिक्त, त्रुटि-सुधार के मामले में त्रुटि को सीधे-सीधे बताने के बजाय , शिक्षक को सही विकल्प प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरण के लिए:
बच्चा: I *eated* in morning.

शिक्षक: Yes, that's right. I also *ate* in the morning.

सीख और अनुशंसा:

हमने इन सिद्धांतों का उपयोग अपने पद्धति को डिज़ाइन करने के लिए किया, जिसके आधार पर रिया ने सोनाले में छह सप्ताह तक अंग्रेज़ी सिखाई। हमने इन रणनीतियों को अपने काम में काफी उपयोगी पाया! यहाँ हम अपने काम से प्राप्त कुछ सीख और सिफारिशों का वर्णन करते हैं। हम इस भाग में भाषा को "रिया ने किया / हमने किया" (सीख), को "आप कर सकते हैं", (अनुशंसा) से बदल दिया है - हमें उम्मीद है कि पाठक इनका अनुसरण कर सकेंगे!

- **उपयुक्त बाल साहित्य का चयन करना:** हमने इसे विभिन्न प्रकार के टेक्स्ट (द्विभाषी मोड में) से परिचय कराने के लिए बहुत उपयोगी और महत्वपूर्ण पाया जो कहानी को दो भाषाओं में कहने और उसके विभिन्न पहलुओं से जुड़ने के लिए एक अवसर निर्मित करेगा। पुस्तकों का चयन छात्रों के संदर्भ, आयु और धाराप्रवाह पठन को ध्यान में रखते हुए पहले ही कर लेना चाहिए। कुछ ध्यान में रखने लायक बातें नीचे दी जा रही हैं।
- चयनित पुस्तकें मराठी और अंग्रेज़ी (जैसे, *स्कूल में रानी का पहला दिन*, प्रकाशक - प्रथम, *बाल कटवाने का वार्षिक दिन,* प्रकाशक-प्रथम; *महारानी गाय,* तूलिका प्रकाशन) में उपलब्ध थीं, इसलिए, दोनों भाषाओं में एक ही पुस्तक का

उपयोग किया गया था। चयनित पुस्तकों में से कुछ द्विभाषी थीं (यानी, इसमें एक ही पुस्तक के भीतर मराठी और अंग्रेज़ी दोनों पाठ थे)।

- लगभग 6-7 पृष्ठों वाली पुस्तकें जिनके प्रत्येक पृष्ठ में केवल एक या दो सरल वाक्य हों, छात्रों की आयु-स्तर के लिहाज़ से आदर्श थीं।
- वे सभी चित्र-पुस्तकें थीं (चित्र 1 देखें), इसलिए चित्रण से छात्रों को बहुत सहायता मिलती थी।

चित्र 1. अंग्रेज़ी कक्षाओं के दौरान उपयोग की जाने वाली कई भाषाओं में कक्षा कक्ष पुस्तकालय। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

- अधिकांश छात्रों ने अंग्रेज़ी और मराठी की अलग-अलग पुस्तकों के बजाय द्विभाषी पुस्तकों को प्राथमिकता दी क्योंकि उन्हें जब भी अंग्रेज़ी समझने में कुछ दिक्कत होती तो वे मराठी पाठ देख सकते थे। हालाँकि, इससे छात्रों में मराठी पाठ को देखने की आदत बढ़ी, जबकि उनका ध्यान अंग्रेज़ी पाठ पर बने

रहना था। इस बात को ध्यान में रखते हुए, शुरुआत में द्विभाषी पुस्तकों का अधिक उपयोग करने का सुझाव दिया जाता है; लेकिन समय के साथ एक भाषा वाली पुस्तकों के उपयोग की दिशामें आगे बढ़ना चाहिए।

द्विभाषी मुखर वाचन तथा मराठी और अंग्रेज़ी के बीच एक "अर्थ सेतु" बनाना: रिया ने एक विशेष प्रक्रिया विकसित की जो काफी अच्छी तरह से काम करती थी।

दिन -1/पहला दिन - मुखर वाचन और परिचित भाषा में चर्चा करना। पहले दिन, परिचित भाषा में एक पुस्तक का मुखर वाचन - अर्थात, मराठी में। मुखर वाचन के दौरान, उन्होंने छात्रों से विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछकर चर्चा और बातचीत शुरू किया, जिससे उनकी रुचि जागृत हुई और वे चर्चा/वार्तालाप में शामिल होते गये। शुरू में मराठी में प्रश्न पूछे गए थे; लेकिन अगर शिक्षक को लगता है कि बच्चों को अंग्रेज़ी काफी आसान लगेगी, तो सवाल अंग्रेज़ी में भी पूछे जा सकते हैं । या, शिक्षक पहले परिचित भाषा में प्रश्न पूछ सकते हैं , और फिर इसे अंग्रेज़ी में दोहरा सकते हैं ।

मुखर वाचन के बाद, पुस्तक के विषय वस्तु पर छात्रों को उनकी परिचित भाषा में चर्चा के लिए कुछ समय अवश्य दें। इस मामले में, छात्रो के साथ पुस्तक पर मराठी में चर्चा की गई, क्योंकि वे इस भाषा में सहजता और सरलता से अपनी सोच को व्यक्त कर सकते हैं और इसके बारे में अपनी समझ भी विकसित कर सकते हैं। चर्चा के बाद एक गतिविधि भी आयोजित की गई। कक्षा सामूहिक रूप से यह तय कर सकती है कि वे मुखर वाचन के बाद की गतिविधि (ड्राइंग / लेखन) में किस थीम पर काम करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, “स्कूल में रानी का पहला दिन” के मुखर वाचन के बाद पहले सप्ताह में छात्रों ने अपने पहले स्कूल (चित्र 3 देखें) की तस्वीरें बनाई और उन्होंने लिखा कि उन्होंने अपने स्कूल के पहले दिन में क्या देखा और कैसा महसूस किया।

चित्र 2. मराठी और अंग्रेजी में एक साथ किताबें पढ़ते हुए बच्चे । चित्र सौजन्य: रिया पारिख

चित्रा 3. मुखर वाचन के बाद छात्रों द्वारा बनाए गए उनके स्कूलों के चित्र। छात्रों को एमटी, अंग्रेजी या दोनों में स्थानों को लेबल करने के लिए कहा गया था। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

दिन 2/ दूसरा दिन . परिचित भाषा में पाठ को फिर से पढ़ना, और नई भाषा को सीखने के लिए "अर्थ-सेतु" बनाना। दूसरे दिन, कहानी के कथानक में जो कुछ हुआ था, उसके विवरण को फिर से देखने के लिए, कक्षा पुस्तक का "चित्र-पठन" कर सकती है। एक चित्र-पठन तब होता है जब शिक्षक पुस्तक में दिए हुए चित्रों के माध्यम से छात्रों को सक्रीय रखता है, और उनके साथ इन पर चर्चा करता है। चित्र-पठन करते समय, शिक्षक छात्रों से कहानी में दिए गए विवरण के बारे में कई प्रमुख प्रश्न पूछ सकते हैं और उनके जवाबों के माध्यम से (जो कि परिचित भाषा में या कभी-कभी अंग्रेज़ी में होंगे), कथानक के प्रमुख वाक्यांशों को अंग्रेज़ी में प्रस्तुत किया जा सकता है। इन प्रमुख वाक्यांशों को बोर्ड पर लिखा जाना चाहिए और शिक्षक वाक्यांश को पढ़ते हुए इंगित कर सकते हैं।

यह मराठी और अंग्रेज़ी पाठ के बीच एक "अर्थ-सेतु" बनाने में और लिखित और बोली जाने वाली अंग्रेज़ी दोनों का एक ही समय में एक्सपोज़र देने में मदद करता है।

यहां अध्ययन के पांचवें सप्ताह से एक उदाहरण है जो इस प्रक्रिया की व्याख्या करेगा। निम्नलिखित बातचीत मराठी और अंग्रेज़ी के को मिला कर हुई।

शिक्षक: काल आपण काय वाचलं होता? (What did we read yesterday?) - हमने कल क्या पढ़ा ?

छात्र: (मिलीजुली प्रतिक्रिया): गाय, महाराणी, पुस्तक, गाय ची पुस्तक (Cow, Maharani, Book, Book on Cow)

शिक्षक: बरोबर. ते गायचं नाव काय होता? (Right. What was the Cow's name?) सही। गाय का नाम क्या था?

छात्र:: महाराणी. (Maharani)

शि: लेखकांनी गोष्टीची सुरुवात कशी केली होती? (How did the writer begin the story? - लेखक ने कहानी कैसे शुरू की?)
छा: गाय रस्तयावर बसली होती. (Cow was sitting on the road - गाय सड़क पर बैठी थी)
शि: हो बरोबर. पण हे गोष्टी कधी घडत आहे? (Yes, right. But when was this story set? - हाँ सही है। लेकिन यह कहानी कब सेट की गई थी?)
छा: दुपारी, उन्हाळा. (Afternoon, Summer - दोपहर, गर्मी में)

शि: बरोबर. दुपारी म्हणजे afternoon (दोपहर) आणण उन्हाळा म्हणजे afternoon. It was a late summer afternoon. (दोपहर। गर्मी की दोपहर थी।
(Right. In English, it is called a summer afternoon. It was a late summer afternoon - सही। अंग्रेज़ी में, इसे summer afternoon कहा जाता है। गर्मी की दोपहर थी).
शि: आणण महाराणी कुठे बसली होती? (And where was Maharani sitting? और महारानी कहाँ बैठी थी?)
छा: रस्त्यावर. (Road/Street -रास्ते में)
शि: हो बरोबर. तो रास्ता कसा होता? (Yes, right. And how was that road? हा सही है। और वह सड़क कैसी थी?)
छा: मोठा, ट्रॅफिक वाला, धूळकत, शहराचा रास्ता. (Big, Traffic, Dusty, City street)
शि: हो. महाराणी एक शहराच्या बाजारतल्या धूळकत रस्ृयावर बसली होती. ृयाला English मध्ये a dusty, crowded street म्हणतात. (Yes. Maharani was sitting on a city crowded street which was dusty. In English, we would say it was a dusty, crowded street.)

वाक्यांश, “late summer afternoon और " dusty, crowded street " बोर्ड पर लिखे गए थे (चित्र 4 देखें) और बोल कर पढ़े गए । यह पैटर्न पुस्तक के चित्र-पठन के दौरान जारी रहा, इस प्रकार मराठी पाठ से अंग्रेज़ी पाठ[5] तक एक "अर्थ-सेतु" का निर्माण किया गया ।

[5] रिया और उसके समूह द्वारा "अर्थ-सेतु" बनाते ह हुए वीडियो देखें यहाँ

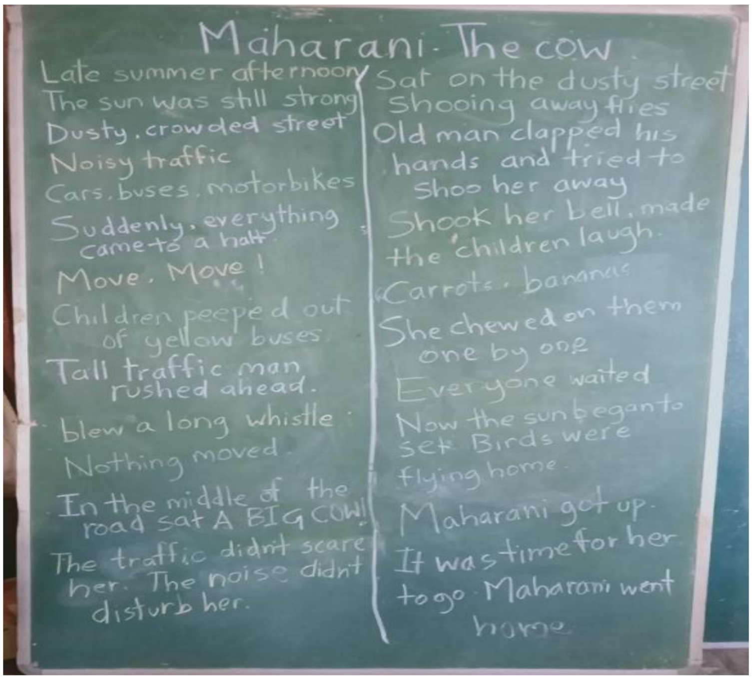

चित्र 4. "महारानी, गाय" के मुखर वाचन और अर्थ-सेतु के दौरान ब्लैकबोर्ड छवि । चित्र सौजन्य: रिया पारिख

दिन 3. अपरिचित भाषा में मुखर वाचन। तीसरे दिन तक, बच्चे उसी पाठ का अंग्रेज़ी में मुखर वाचन के लिए तैयार हैं। इस समय तक, छात्र विषय से बहुत परिचित हो चुके होंगे और अंग्रेज़ी में पाठ से वाक्यांशों का उन्हें अपना पहला एक्सपोज़र भी मिल चुका होगा। मुखर वाचन और अर्थ-सेतु विकसित करने की इस प्रकिया से छात्रों की प्रतिक्रिया में वृद्धि हुई और यह अंग्रेज़ी पाठों की छात्रों की समझ बढ़ाने में प्रमुख योगदान कारकों में से एक था। छात्र की समझ और अर्थ पर ध्यान सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक परिचित भाषा में प्रश्न पूछना जारी रख सकते हैं।

वर्णनात्मक लेखन (छह-चरण प्रक्रिया): रिया ने एक छह-चरण वर्णनात्मक लेखन प्रक्रिया भी विकसित की (चित्र 5 देखें)।

चरण 1. छात्र पुस्तक से किसी विशेष पाठ पर चर्चा करते हैं या चित्र बनाते हैं और फिर अपनी परिचित भाषा में इसके बारे में लिखते हैं।

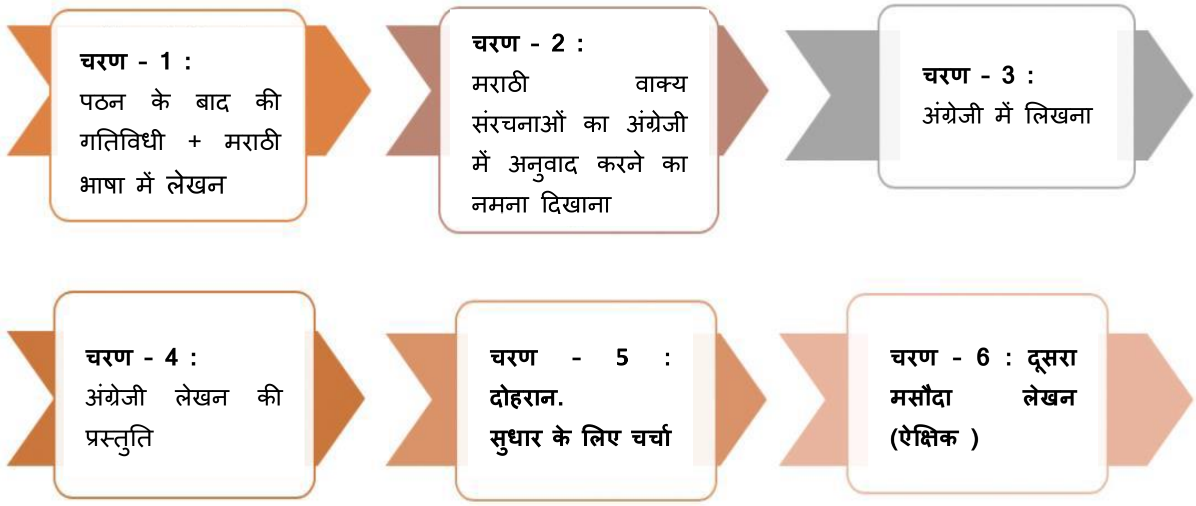

यह देखा गया कि जब छात्रों ने पहले मराठी में लिखा था, तो उनकी सोच का प्रवाह निर्बाधित था - यदि वे सीधे अंग्रेज़ी में लिखते तो शब्दावली, व्याकरण और लिपि के ज्ञान की कमी के कारण उनकी सोच का प्रवाह बाधित हुआ होता। इसके परिणामस्वरूप लेखन अधिक सहायक विवरणों के साथ बेहतर संरचित था। छात्रों के अपने परिचित भाषा में लिखने से उनकी व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और विचार बाधित नहीं होते हैं ।

चरण 2. कुछ छात्रों को कक्षा के साथ अपने लेखन को साझा करने के लिए आमंत्रित करें और ब्लैकबोर्ड पर उनके लेखन का कुछ हिस्सा लिखें। इसके बाद, उन्हें दिखाएँ कि कुछ वाक्यों (समान वाक्य संरचनाओं को चुनें) को अंग्रेज़ी में कैसे लिखा जा सकता हैं। (चित्र 6 देखें)।

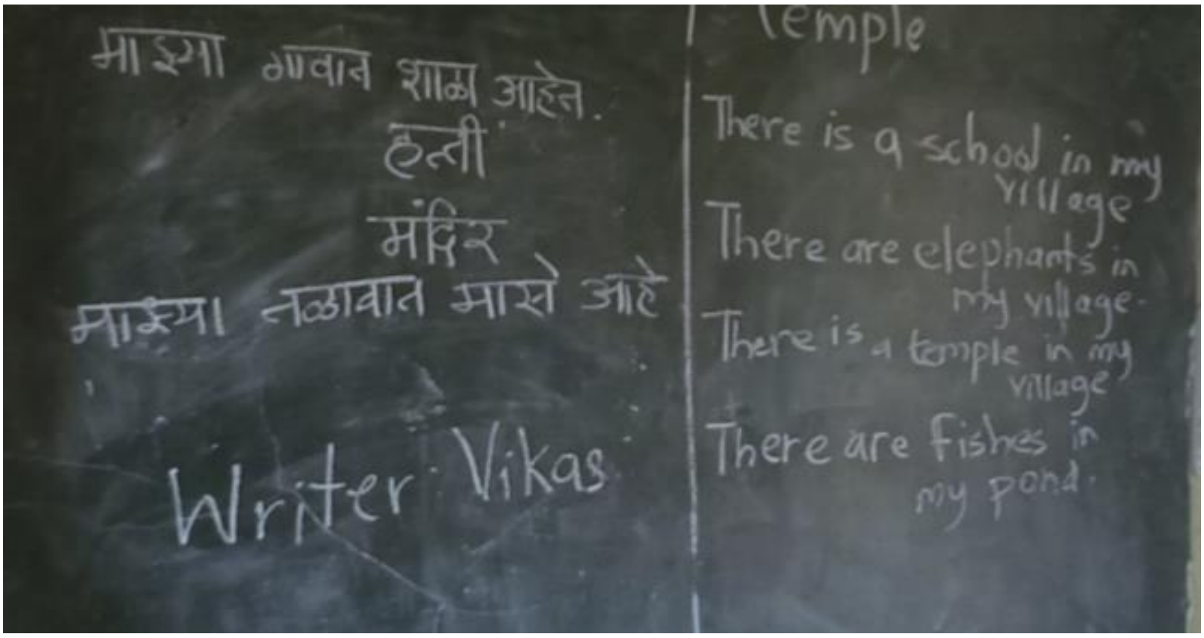

चित्र 6. कक्षा में एक छात्र द्वारा किया गया मराठी लेखन और उसका अंग्रेज़ी अनुवाद। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

चरण 3. आपके द्वारा चरण 2 में कराए गए अभ्यास के बाद छात्रों को अपनी परिचित भाषा की रचना को अंग्रेज़ी में लिखने के लिए समय और मौके दिऐ जाने चाहिए । छात्रों पर केवल अंग्रेज़ी में लिखने के लिए दबाव नहीं डालना चाहिए,बजाए इसके उन्हें उनकी परिचित भाषा के साथ अंग्रेज़ी मिला कर लिखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। एक सहजकर्ता के रूप में, बच्चों को विचार, शब्दावली और वर्तनी में मदद करने के लिए उनके आस-पास रहें। इस तरह की गतिविधि कई अलग-अलग लेखन शैलियों को विकसित करने के अवसर देती है जैसा कि कई छात्रों के लेखन चित्र 7 (ए-डी) में देखा जा सकता है।

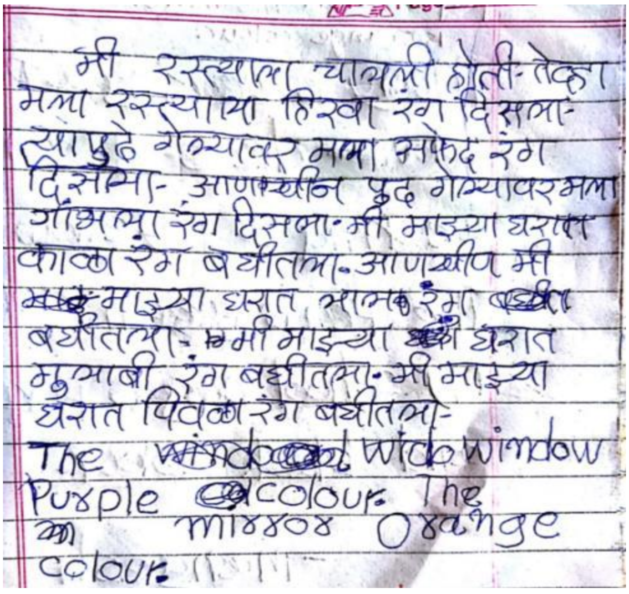

चित्रा 7 a. अधिकांशतः मराठी में और कुछ शब्द या वाक्य अंग्रेज़ी के साथ ।

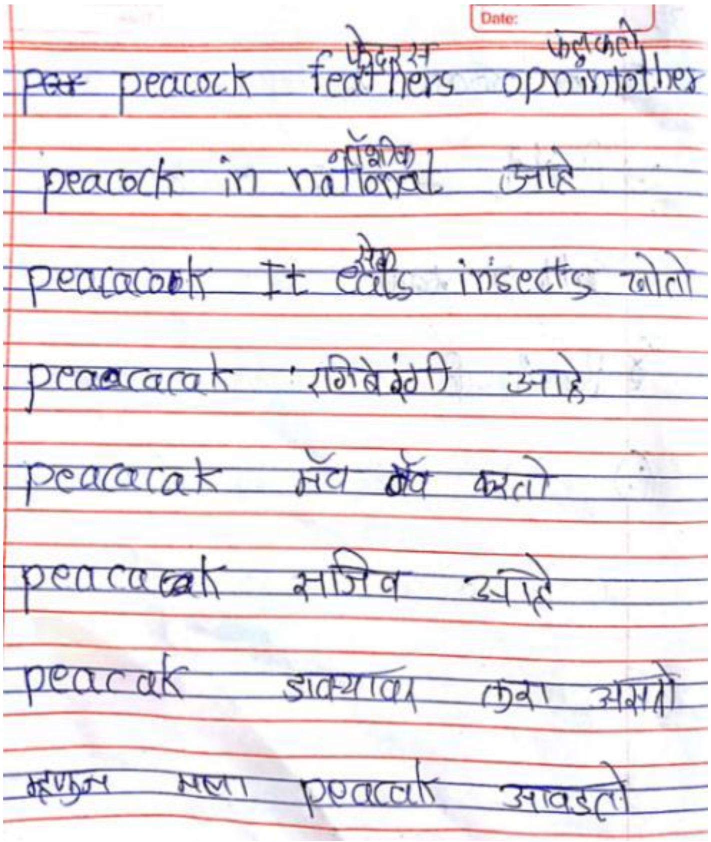

चित्र 7 b. मिश्रित मराठी और अंग्रेज़ी वाक्य। कुछ मराठी शब्द रोमन लिपि में लिखे गए हैं। कुछ अंग्रेज़ी शब्द देवनागरी लिपि में लिखे गए हैं। इस तरह से लिखने वाले छात्र अक्सर एक मराठी शब्द के लिए अंग्रेज़ी में वर्तनी पूछते है (जैसे घर की स्पेल्लिंग अंग्रेज़ी में क्या है?')। यह देखा जा सकता है कि ऐसे प्रारूपों का उपयोग करने वाले छात्रों के दिमाग में दो भाषाओं और उनकी लिपियों के बीच अंतर नहीं होता है और उनकी भाषा के साथ-साथ स्क्रिप्ट के उपयोग मे भी मिश्रित रहते है।

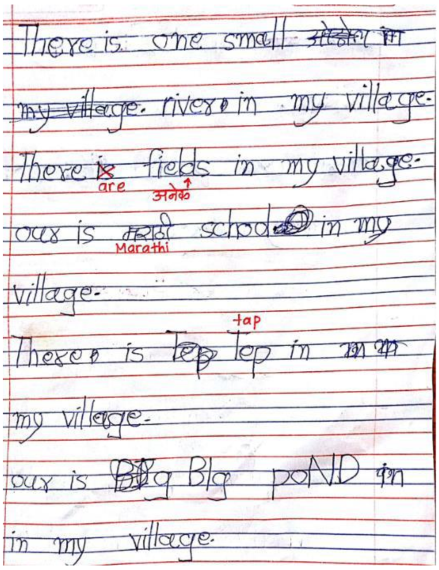

चित्रा 7 c. अधिकांश अंग्रेज़ी में- कुछ अपरिचित शब्द या वाक्य मराठी में। अंग्रेज़ी शब्दों के लिए गढ़ी हुई वर्तनी भी है । सही उपयोग प्रदर्शित करने के एक भाग के रूप में, पूर्व-सीखे अवधारणाओं के लिए छात्रों के साथ सुधार किए गए थे।

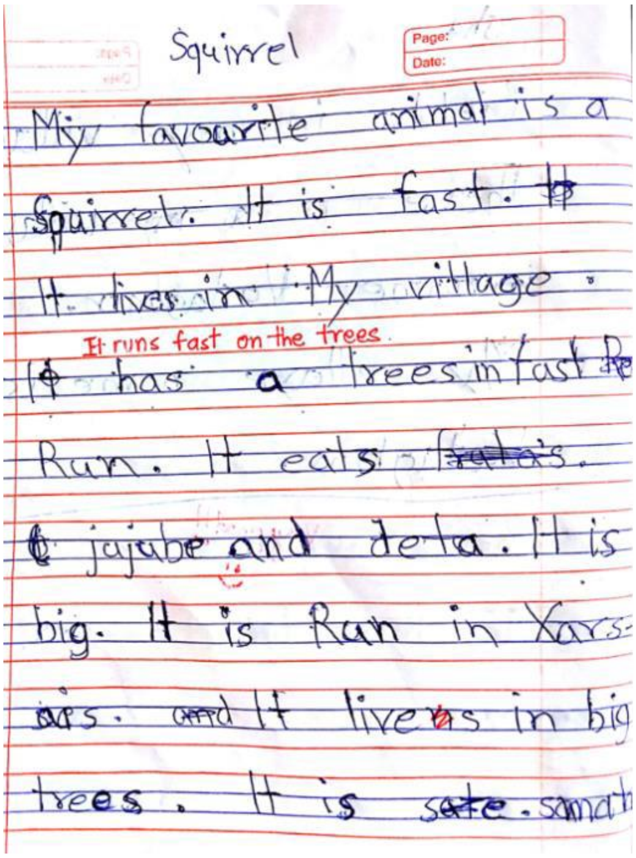

चित्रा 7 d. वाक्य संरचना में कुछ त्रुटियों और गढ़ी हुई वर्तनी के साथ पूरी तरह से अंग्रेज़ी में लिखा हुआ। इस चरण में लिखने वाले अधिकांश छात्रों ने स्वतंत्र लेखन के दौरान शब्दावली और विचार संरचना की मदद ली। सही उपयोग प्रदर्शित करने के एक भाग के रूप में, पूर्व-सीखे अवधारणाओं के लिए छात्रों के साथ सुधार किया गया था

चरण 4. एक बार जब छात्र परिचित भाषा और अंग्रेज़ी के मिश्रण से लिख लेते हैं , तो कुछ छात्रों को कक्षा के समक्ष अपने लेखन को साझा करने के लिए फिर

से आमंत्रित किया जा सकता है। अन्य छात्र वाक्य विशेष के अर्थ, या पूरे लेखन के बारे में सवालों के जवाब देने में संलग्न हो सकते हैं। यह चरण छात्रों को अंग्रेज़ी से परिचित भाषा में चर्चा करने के लिए वापस जाने की अनुमति देता है। अंग्रेज़ी और परिचित भाषा के बीच इस तरह की दोतरफा बातचीत अर्थ-निर्माण में सहायक होती है।

चरण 5. व्यक्तिगत लेखन सत्र और लिखित प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने के बाद ए, यदि आवश्यकता होती है, तो एक छोटा सत्र औपचारिक रूप से सही वाक्य संरचनाओं को पढ़ाने के लिए रखा जा सकता है ताकि बच्चों की सामान्य या बार-बार होने वाली गलतियों को दूर किया जा सके । ऐसे सत्र केवल एक विशेष वाक्य संरचना के तीन से चार एक्सपोज़र के बाद ही आयोजित किए जाने चाहिए, और यह उन गतिविधियों की मदद से आयोजित किए जा सकते हैं जो उबाऊ अभ्यास और व्यापक सुधार के बजाय ज़्यादा एक्सपोज़र दें। उदाहरण के लिए, चित्र 8 और 9 में, छात्रों को एक लघु-पाठ और एक गतिविधि के माध्यम से सही वाक्य संरचना के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए 'is'और 'are' का उपयोग पढ़ाया गया।

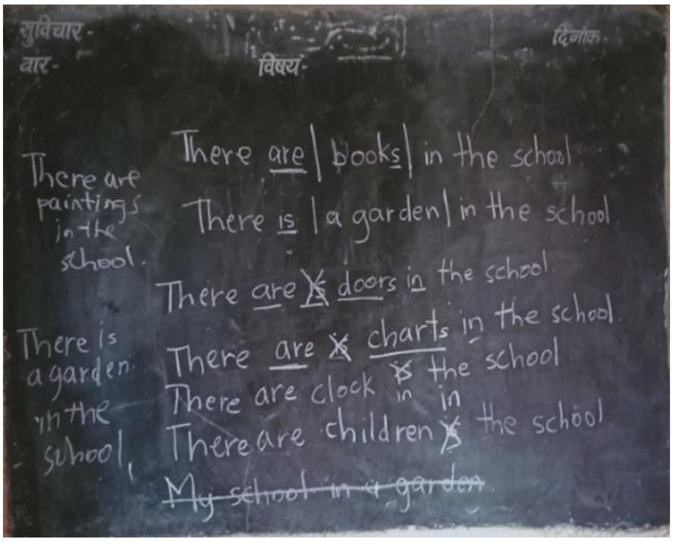

चित्र 8. त्रुटि-सुधार के लिए लघु-पाठ। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

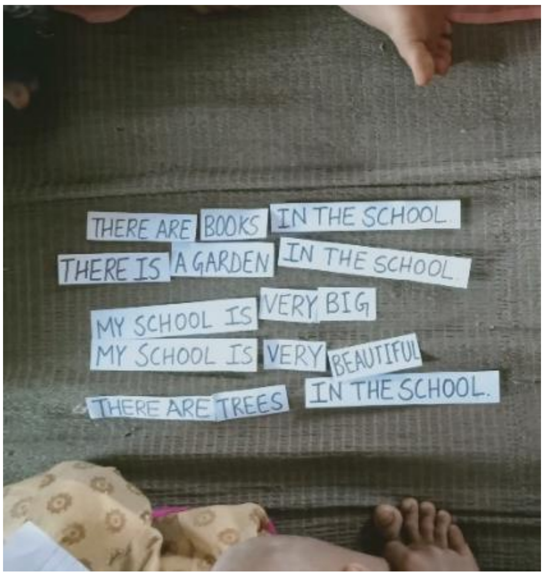

चित्र 9. वाक्य संरचना के एक्सपोज़र देने के लिए गतिविधियाँ। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

चरण 6 (वैकल्पिक/इच्छानुसार)। जो छात्र अपने लेखन पर दुबारा काम करने के लिए इच्छुक हैं, उन्हें दूसरा ड्राफ्ट लिखने के मौके उपलब्ध कराये जाने चाहिए। दुबारा लिखने से छात्रों को उनके लेखन में सहायक विवरण बढ़ाने में और नए

सीखे हुए अंग्रेज़ी शब्दों या वाक्य संरचनाओं के उपयोग के साथ प्रयोग करने में सहयता मिलती है । इस चरण में , सुधार (व्याकरण, वर्तनी, विराम चिह्न) के लिए कुछ सुझाव शिक्षक द्वारा दिया जा सकता है, *हालाँकि प्रारंभिक शिक्षण के दौरान अंग्रेज़ी में कम एक्सपोज़र वाले बच्चों के लिए कभी भी औपचारिक सुधार का लक्ष्य सही नहीं होता है!*

शब्द खोज: यह गतिविधि मुखर वाचन और वर्णनात्मक लेखन के बाद आयोजित की जा सकती है। इस गतिविधि में, विशेष शब्दों, जिन्हें वे सीखना चाहते हैं, को खोजने और उनके अर्थ को समझने के लिए छात्र (समूहों में) दोनों भाषाओं की पुस्तकों के साथ जुड़ सकते हैं। इसके लिए शिक्षक कागज़ दे सकते हैं जिस पर छात्र अपने शब्दों को लिख सके, और उन छात्रों की मदद कर सकते हैं जो शब्दों को खोजने में संघर्ष कर रहे हैं। इस गतिविधि के बाद, शिक्षक छात्रों द्वारा चुने गए सभी शब्दों को बोर्ड पर लिख सकते हैं (चित्र 10 देखें) जिससे उनकी समग्र शब्दावली बढ़े। इस तरह की गतिविधि छात्रों को ध्यान से जुड़ने और ध्यान से पाठ में शब्द के अर्थ खोजने का मौका देती है, जिसके परिणामस्वरूप दोनों भाषाओं में शब्दों और उनके अर्थों का एक्सपोज़र बढ़ता है।

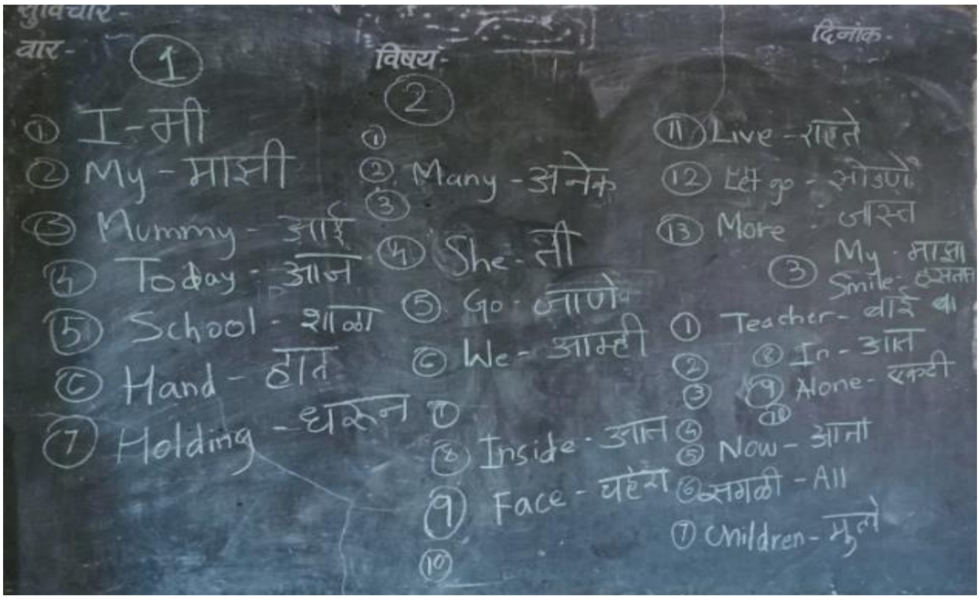

चित्र 10. शब्द खोज चित्र सौजन्य: रिया पारिख

सस्वर/(Choral) रीडिंग : सस्वर (Choral) रीडिंग एक ऐसी रणनीति है जिसमें छात्र और शिक्षक पाठ के कुछ हिस्सों को एक साथ पढ़ सकते हैं, और फिर छात्र

कोरस में एक समूह के रूप में इसे दोबारा पढ़ सकते हैं। इस रणनीति को प्रदर्शन और अभ्यास के माध्यम से छात्रों को अंग्रेज़ी सीखने के विभिन्न पहलुओं (जैसे कि आवाज़ का उतार-चढ़ाव, वर्ण-ध्वनि संयोजन, शब्द-विच्छेद आदि) के अभ्यास के तौर पर व्यवहार में लाया गया था। एक बार दोनों भाषाओं में मुखर-वाचन होने के बाद या प्रक्रिया में अंतिम चरण के रूप में इसे किया जा सकता है।

परिचित पाठ (टेक्स्ट) के साथ बार-बार जुड़ाव। प्रतिदिन, छात्रों को कक्षा पुस्तकालय [6]बनाकर, कक्षा में पढ़ाई गई पुस्तकों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। यह अकेले या समूह में भी हो सकता है। पिछली किताबों में चर्चा किए गए विचारों, शब्दों, वाक्यांशों, वर्तनी का ज़िक्र नई पुस्तकों पर चर्चा और लेखन के दौरान जा सकता है।

शिक्षक को किस भाषा में बात करनी चाहिए?

एक शिक्षक बच्चों को एक्सपोज़र देने और सुगम इनपुट सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए कभी अंग्रेज़ी और तो कभी परिचित भाषा का इस्तेमाल कर सकता है। शुरुआती हफ्तों में, शिक्षक अंग्रेज़ी की तुलना में परिचित भाषा का उपयोग अधिक कर सकता है, जो छात्रों को सहज बनाता है। यह छात्र की समझ में भी सुधार लाता है। एक बार कक्षा की दिनचर्या तय होने के बाद, कुछ सामान्य निर्देशों को परिचित भाषा में बताते हुए अंग्रेज़ी में दोहराया जा सकता है। शुरुआत में, इस प्रकार की पुनरावृत्ति समय लेने वाली लग सकती है, हालांकि, यह समझ को सुनिश्चित करने के साथ-साथ छात्रों को अंग्रेज़ी के लिए महत्वपूर्ण एक्सपोज़र प्रदान करने का एक तरीका है। रिया की कक्षा में ऐसे उदाहरण थे, जब अंग्रेज़ी सीधे बोली जाती थी। यह उन मामलों में था जब उसे यकीन था कि उस वाक्य का अर्थ निश्चित रूप से छात्रों को पता था।

यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक सजगतापूर्वक कक्षा में दोनों भाषाओं का उपयोग करता है, विशेष रूप से अंग्रेज़ी। यह बच्चों को शब्दों के ध्वनि निरूपण (एक शब्द की आवाज़), साथ ही, नई भाषा में नए शब्द, व्याकरण, मुहावरों और अभिव्यक्तियों

---

[6] देखें: कक्षा पुस्तकालय स्थापित करने के तरीके के बारे में अधिक जानने के लिए ईएलआई के प्रैक्टिशनर संक्षिप्त 17, "प्रारंभिक भाषा और साक्षरता का समर्थन करने के लिए एक कक्षा पुस्तकालय की स्थापना"।

के साथ परिचित होने में मदद करता है,साथ ही साथ यह इस भाषा को सीखने के लिए सुगम वातावरण भी बनाता है।

क्या यह अध्यापन का प्रभावी तरीका है? अपने रिसर्च में हमने पाया कि बहुभाषी शिक्षण का इस्तेमाल रिया की कक्षा में छह सप्ताह के दौरान बच्चों के सीखने में बहुत मददगार साबित हुआ। यद्यपि , इतने छोटे और कम समय वाले शिक्षक रिसर्च परियोजना से व्यापक निष्कर्ष निकालना संभव नहीं है ।

हमने पाया कि कक्षा में परिचित भाषाके उपयोग से -

- छात्रों के लिए परिचित और सहज परिवेश का निर्माण किया जा सकता है I
- उन शिक्षकों को सहायता मिलती है, जिनके पास अंग्रेज़ी के उपयोग की सीमित क्षमता है क्योंकि इसका उपयोग करने के अवसर उनके संदर्भों में सीमित हैं। जिस सरकारी स्कूल की कक्षाओं का इसका आयोजन किया गया था, वहां के शिक्षकों ने ये अनुभव किया है कि यह उनके लिए अकेले अंग्रेज़ी का प्रयोग करने की तुलना में कम चुनौतीपूर्ण, यानि सहज था।
- एक भाषा की कक्षा में उच्च प्रेरणा और रूचि बनाए रखने में मदद करता है, जो सम्पूर्ण रूप से भाषा सीखने और विचार की अभिव्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- छात्रों में समझ के साथ, उनकी सोच को व्यक्त करने और विकसित करने में सहायता मिलती है।
- एक प्रासंगिक तरीके से अंग्रेज़ी सिखाने में मदद मिलती हैं।

लेकिन ... क्या इस प्रयास के परिणामस्वरूप छात्रों को ज़्यादा सहज महसूस कराने के अतिरिक्त उनकी अंग्रेज़ी की क्षमताओं में वृद्धि हुई? छह सप्ताह का समय निश्चित निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए बहुत कम है, लेकिन रिया ने अपने छात्रों के सीखने में सुधार के कई साक्ष्य देखे और महसूस किये हैं , जैसा कि चित्र 11 (a-b) में दिखाया गया है, जो सप्ताह 2 से 5 के बीच बच्चे के लेखन के विकास को दर्शाता है।

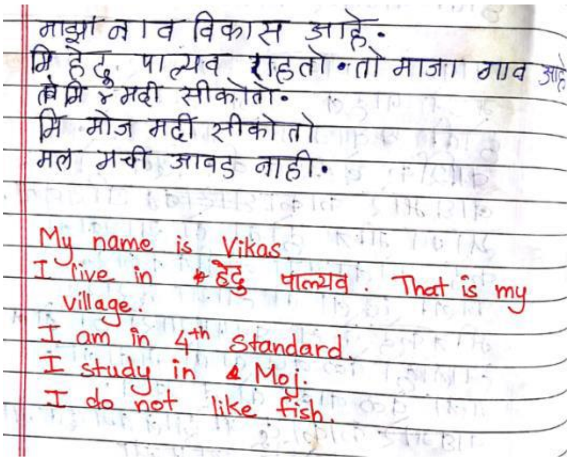

चित्र 11 ए। दूसरे सप्ताह से छात्र लेखन नमूना। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

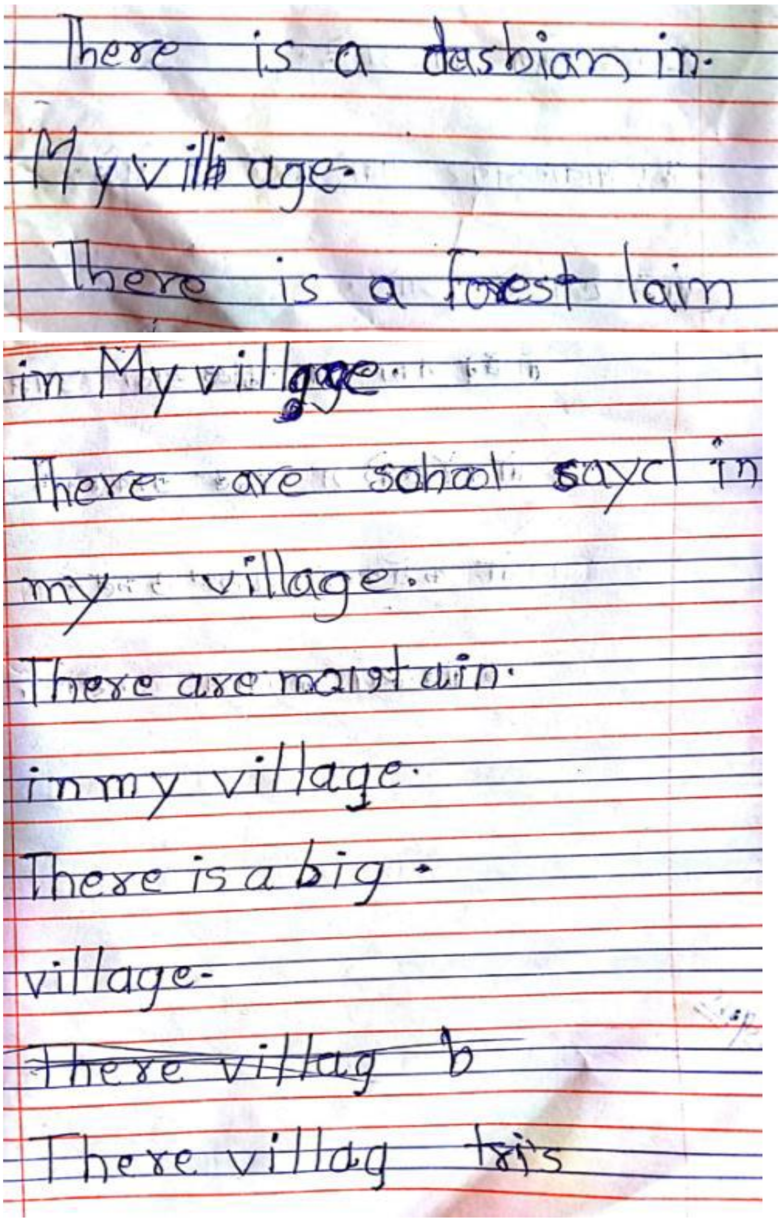

चित्र 11 बी। पांचवें सप्ताह से छात्र लेखन नमूना। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

जैसा कि चित्र 11 ए में देखा जा सकता है, अध्ययन के दूसरे सप्ताह में, बच्चों ने केवल मराठी में लिखा था। जब रिया ने छात्र से उसे अंग्रेज़ी में लिखने का प्रयास करने के लिए कहा, तो उसने ऐसा नहीं किया, यह कहते हुए कि उसे "अंग्रेज़ी में लिखना नहीं आता है"। इसके बाद, रिया ने उसी कन्टेंट के नीचे उसे अंग्रेज़ी में लिखा, यह मॉडल करने के लिए कि इसे अंग्रेज़ी में कैसे लिखा जा सकता है। हालाँकि, 5 वें सप्ताह तक, वही छात्र अपने ड्रीम विलेज के बारे में पहले इसे मराठी में लिखने के बाद अंग्रेज़ी में लिखने की कोशिश करने के लिए तैयार था। इस अभ्यास में उसे एक सहपाठी ने मदद की थी। उनकी इच्छा शक्ति में एक नाटकीय/आकस्मिक सुधार हुआ है, और संभवतः तीन सप्ताह के अंतराल में अंग्रेज़ी में लिखने की क्षमता में भी। यह एक अलग-थलग उदाहरण नहीं था - कई छात्रों ने तो कम परिचित भाषा में ही शुरू करने की इच्छा जताई।

मौखिक भाषा के विकास के संदर्भ में, रिया का अनुभव बताता है कि जहां लक्ष्य भाषा के मौखिक इस्तेमाल के उदाहरण शुरुआत में सीमित होंगे, वहीं

Translanguaging[7] (एक वाक्य में कई भाषाओं से शब्दों का उपयोग) के उदाहरण भी होंगे जो छात्र के बातचीत में देखे जा सकते हैं (चित्र 12 देखें)। धीरे-धीरे, संदर्भ में नए अंग्रेज़ी शब्दों और. वाक्य संरचनाओं का जैसे-जैसे एक्सपोज़र बढ़ेगा धाराप्रवाह अंग्रेज़ी में भी उसी अनुपात में बढ़ोत्तरी होगी।

"तेgreen कुल्फीcreamy होती." *(That green kulfi was creamy)* *"तेdoor purple आहे."* *(That door is purple)* *"There are घरin my village."* *(There are houses in my village)*	*T: What date is it today?* *S: 13th December दोन हजार अठरा (2018)*	*T: 'हात लावणे म्हणजे काय?* *(What does 'to touch' mean in English?)* *S: 'Touch' करणे (To touch)*

चित्र 12. मौखिक बातचीत में अनुवाद के उदाहरण।

इस परियोजना में एक दिलचस्प बात यह हुई की दोनों भाषाओँ के सक्रिय जुड़ाव के परिणामस्वरूप ,बच्चे मराठी भी पहले से ज़्यादा धारा-प्रवाह उपयोग कर पा रहे थे , चित्र 13 में एक छात्र का लेखन नमूना दिखाया गया है जो मराठी का एक इमर्जेंट और कुछ हद तक अनिच्छुक सीखने लिखने वाला था I परियोजना के अंतिम सप्ताह तक, छात्र ने शिक्षक की मदद से मराठी में अपने पसंदीदा जानवर के बारे में स्वेच्छा से लिखा (सभी छात्र अंग्रेज़ी में एक ही

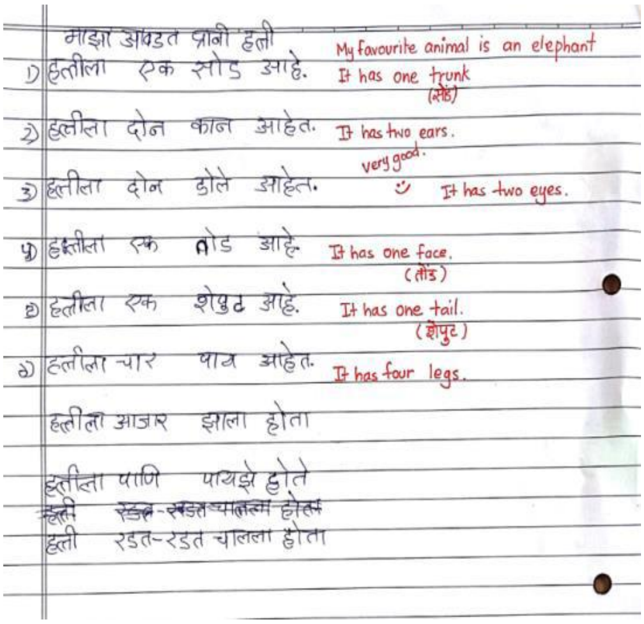

चित्र 13. मराठी में छात्र लेखन का नमूना। चित्र सौजन्य: रिया पारिख

[7] Translanguaging (गार्सिया एंड वी, 2014) एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण है जो बताता है कि द्वि-या बहुभाषी बच्चों के पास एक "एल 1", "एल 2" और अन्य धारणाएं होती हैं जो सही नहीं है। बल्कि , बहुभाषी वक्ताओं में एक भाषा का भण्डार होता है, जिसमें उन सभी भाषाओं को शामिल किया जाता है, जिन्हें वे कई तरीकों से व्यक्त करने और संवाद करने के लिए उपयोग करते हैं। इसलिए, छात्रों को कक्षा में उन्हें आने वाली सभी भाषाओं का उपयोग करने की अनुमति दी जानी चाहिए अन्यथा यह उनके भाषाई संसाधनों की बर्बादी होगी। इस बात को ध्यान में रखते हुए, छात्रों (या शिक्षक) को उन भाषाओं का उपयोग करने से प्रतिबंधित नहीं किया जाना चाहिए जिनका उपयोग कर के वे अपने विचारों को कक्षा में मौखिक या लिखित रूप में व्यक्त करना चाहते हैं।

विषय पर लिख रहे थे)। लाल स्याही से शिक्षक ने ये दिखाया है कि इसे अंग्रेज़ी में कैसे लिखा जा सकता है - इस छात्र पर उसे अंग्रेज़ी में लिखने के लिए कोई दबाव नहीं था जब तक वह तैयार न हो जाय!

इससे पता चलता है कि बहुभाषी संदर्भों में, एक दूसरे से अलग कर के भाषा नहीं सीखी जाती है। इसलिए, हमें उन्हें एक-दूसरे से अलग किए बिना सिखाना चाहिए, पर इस तरह से, जो छात्रों को उनकी संपूर्ण भाषा के भण्डार का उपयोग करने में सहायता करता हो।

अंत में, इस तरह के शिक्षण को प्रभावी ढंग से वैसे लोगों के लिए उपयोग किया जा सकता है , जिन्होंने अभी अभी शुरुआत की है, और जो अंग्रेज़ी वर्णमाला को पहचानते हैं यह उन सेटिंग्स में सबसे अधिक लाभदायक होगा जहां अंग्रेज़ी का बहुत कम या कोई एक्सपोज़र नहीं है और जहां छात्रों ने कम से कम एक अन्य भाषा में कुछ दक्षता हासिल की है। आदर्श रूप में, यह अन्य भाषा छात्रों के घर में बोली जाने वाली भाषा (मातृभाषा) होनी चाहिए; लेकिन, जैसा कि यहां दिखाया गया है, यहां तक कि एक ऐसी भाषा भी जिससे छात्र परिचित हैं सहायक हो सकती है I इस तरह का अध्यापन उन क्षेत्रों में थकाऊ और कम प्रभावी होगा जहाँ अंग्रेजी का एक्स्पोज़र अधिक होता है और प्राकृतिक तौर पर अंग्रेज़ी सीखने की संभावना प्रबल हो जाती है I । रिया का दोनों भाषाओँ से परिचित होना और उनमें सहज होने से काफ़ी आसानी हुई , लेकिन यह उन परिस्थितियों में भी प्रयोग किया जा सकता है जहाँ स्वयं शिक्षक की पकड़ भी अंग्रेजी पर उतनी मज़बूत नहीं है I

Adapted from ELI Handout 18 (2019): “Using Mother Tongue To Facilitate English Language Learning In Low Exposure Settings”

References

Cook, V. (2001). *Using the First Language in the Classroom*. Draft paper.

Cummins, J. (1991). Interdependence of first- and second-language proficiency in bilingual children. In E. Bialystok (Ed.), *Language processing in bilingual children* (pp. 70-89). New York, NY, US: Cambridge University Press.

García, O., Wei, L. (2014). *Translanguaging: Language, bilingualism and education*. UK: Palgrave Macmillan.

Jhingran, D. (2009). Hundreds of home languages in the country and many in most classrooms: Coping with diversity in primary classrooms in India. In A. K. Mohanty, M. Panda, R. Phillipson and T. Skutnabb-Kangas (Eds.). *Multilingual education for social justice: Globalizing the local* (pp. 250-267). New Delhi: Orient Blackswan.

Krashen, S. (1982). *Principles and practice in second language acquisition*. New York: Pergamon Press.

Sarda, M., Sen, S. R., Menon, S., Sachdeva, S., Singh, S., & Kaul, V. (2016). Early language and literacy in India: A position paper. *Approaches to language and literacy* (pp. 47-50). CECED, Ambedkar University, New Delhi: USAID; Care India.

Authors: Riya Parikh & Shailaja Menon

Conceptual Support and Editing: Shailaja Menon

Copy Editing: Simrita Takhtar

Layout and Design: Harshita V. Das

©